भाषा के अभिलक्षण (विशेषता)

यहाँ 'भाषा' से आशय है 'मनुष्य की भाषा' तथा 'अभिलक्षण' (Property) से आशय है 'विशेषता' या 'मूलभूत लक्षण'। किसी भी वस्तु के अभिलक्षण ही उस वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलगाते हैं। इस तरह मानव-भाषा के अभिलक्षण के हैं जो उसे अन्य सभी प्राणियों की भाषाओं से अलगाते हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि भाषा केवल मनुष्यों की ही बपौती नहीं। मकड़ी, मधुमक्खी, गिबन (बन्दरों की एक जाति जिनके हाथ बहुत लम्बे होते हैं), सिकिलबैक (एक प्रकार की छोटी मछली) तथा चिम्पैंजी आदि अनेक ऐसे जीव-जन्तु हैं जो किसी-न-किसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि मनुष्य की भाषा अन्य सभी जीवों की भाषा से स्पष्टतः अलग है। उसके अपने कुछ ऐसे अभिलक्षण हैं

Scanned with CamScanner

जो सभी मिलकर उसे अन्य सभी प्राणियों की भाषाओं से अलग करते हैं। अर्थात् इन अभिलक्षणों में कुछ तो अन्य जीवों की भाषाओं में मिलते हैं, किन्तु सभी केवल मानव-भाषा में। हॉकिट इस प्रसंग में सात अभिलक्षणों का उल्लेख करते हैं। कुछ अन्य लोगों ने इससे कुछ कम या कुछ अधिक अभिलक्षणों का उल्लेख किया है। मुख्य अभिलक्षण निम्नांकित नौ-दस माने जा सकते हैं–

1. **यादृच्छिकता**–'यादृच्छिक' का अर्थ है 'जैसी इच्छा हो' या 'माना हुआ'। हमारी भाषा में किसी वस्तु या भाव का किसी शब्द से सहज-स्वाभाविक या तर्कपूर्ण संबंध नहीं है। वह समाज की इच्छानुसार मात्र माना हुआ सम्बन्ध है। यदि सहज-स्वाभाविक सम्बन्ध होता तो सभी भाषाओं में एक वस्तु के लिए एक ही शब्द होगा। 'पानी' के लिए सभी भाषाएँ 'पानी' का ही प्रयोग करतीं। अंग्रेजी 'वाटर' का प्रयोग न करती, न फारसी 'आब' का और न रूसी 'वदा' का। विभिन्न भाषाओं के सभी शब्दों में हम यह यादृच्छिकता पाते हैं। यह यादृच्छिकता शब्द के स्तर पर थी। व्याकरण के स्तर पर रूपरचना तथा वाक्यरचना में भी यही बात है। अंग्रेजी कर्ता कारक के लिए किसी भी कारक चिह्न का प्रयोग नहीं करती (Ram slapped Mohan), किन्तु हिन्दी 'ने' का प्रयोग करती है। (राम ने मोहन को थप्पड़ मारा)। ऐसे ही हिन्दी में वाक्य में कर्ता-कर्म-क्रिया (राम ने पत्र लिखा) का क्रम है तो अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया-कर्म (Ram wrote a letter) का। इस तरह ये सारी बातें यादृच्छिक है। कहीं भी इनके पीछे कोई तर्क नहीं है–न शब्द और अर्थ के सम्बन्ध में, न रूप रचना में और न वाक्य के पदक्रम या अन्वय आदि में। यही है भाषा की यादृच्छिकता। यों यादृच्छिकता थोड़ी बहुत तो अन्य प्राणियों (जैसे मधुमक्खी, गिबन आदि) की भाषा में भी मिलती है, किन्तु मानव-भाषा जितनी नहीं।

2. **सृजनात्मकता (Creativity)**–भाषा में शब्द और रूप तो प्रायः सीमित होते हैं, किन्तु उन्हीं के आधार पर हम अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार सादृश्य के आधार पर नित्य नए-नए असीमित वाक्यों का सृजन करके उनका प्रयोग करते हैं। हम ऐसे अनेकानेक वाक्यों का रोज ही प्रयोग करते हैं। मजे की बात यह है कि वाक्यों के नए होने पर भी श्रोता को उन्हें समझने में कोई भी कठिनाई नहीं होती। यह कमाल इस सृजनात्मकता का ही है जो वक्ता और श्रोता दोनों की ही भाषिक क्षमता में होती है। और उसी के परिणामस्वरूप वक्ता नित्य नए-नए वाक्य का प्रयोग कर लेता है और श्रोता उन्हें समझ लेता है। हम 'मैं', 'वह', 'तुम', 'बुलवाना' इन चार शब्दों से बहुत सारे वाक्यों का सृजन कर सकते हैं, जैसे 'मैंने उसे तुमसे बुलावाया', 'मैंने तुम्हें उससे बुलवाया', 'उसने मुझे तुमसे बुलवाया' तथा 'उसने तुम्हें मुझसे बुलवाया' आदि। किन्तु अन्य जीव-जन्तु अपनी भाषा में इस तरह सृजन नहीं कर सकते। वे तो जैसा जानते हैं, उसको वैसा ही दुहरा भर सकते हैं। मधुमक्खी एकमात्र अपवाद है जिसकी भाषा में यह गुण थोड़ा-बहुत होता है, किन्तु मानव-भाषा जितना नहीं। इस अभिलक्षण को उत्पादकता (Productivity) भी कहा गया है।

3. **अनुकरणग्राह्यता**–मानव-भाषा समाज-विशेष से अनुकरण द्वारा सीखी या ग्रहण की जाती है। जन्म से कोई भी व्यक्ति कोई भाषा नहीं जानता, माँ के पेट से कोई भी बच्चा सीखकर नहीं आता, किन्तु अन्य सभी जीव-जन्तु अपनी भाषा अपने समाज से नहीं सीखते, बल्कि उनकी अपनी भाषिक क्षमता उनमें जन्मजात होती है।

Scanned with CamScanner

अनुकरणग्राह्यता के कारण ही एक व्यक्ति अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य अनेक भाषाएँ भी अनुकरण से सीख सकता है किन्तु कोई अन्य जीव-जन्तु ऐसा नहीं कर सकता। इस तरह मानव-भाषा आनुवंशिक (Hereditary) नहीं होती, जैसी कि अन्य जीव-जन्तुओं की भाषाएँ होती हैं। भाषा के इस अभिलक्षण को कुछ अन्य नामों से भी पुकारा गया है : **सांस्कृतिक प्रेषणीयता** (Cultural Transmission) : क्योंकि संस्कृति के साथ-साथ उसके एक अंगरूप में भाषा सीखी जाती है, परम्परानुगामिता (Conventionality) : क्योंकि परम्परा या रूढ़ि (Convention) के रूप में भाषा सीखी जाती है, सीखने के योग्य होना या अधिगम्यता (Learnability) : क्योंकि भाषा सीखी जा सकती है।

4. परिवर्तनशीलता—मानवेतर जीवों की भाषा परिवर्तनशील नहीं होती। उदाहरणार्थ; कुत्ते पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही प्रकार की अपरिवर्तित भाषा का प्रयोग करते आ रहे हैं, किन्तु मानव-भाषा हमेशा परिवर्तित होती रहती है। संस्कृत काल का 'कर्म' प्राकृत-काल में 'कम्म' हो गया तो आधुनिक काल में 'काम'। इस तरह चिरपरिवर्तनशीलता भी मानव-भाषा को अन्य जीवों की भाषाओं से अलगाती है। इस अन्तर का मुख्य कारण इस मानव भाषा का अनुकरणग्राह्य होना है, जबकि अन्य भाषाएँ आनुवंशिक होती हैं।

5. विवक्तता (Discreteness)—मानव भाषा का स्वरूप ऐसा नहीं है जो पूरा अविच्छिन्न रूप से एक हो। वह तत्वतः कई घटकों या इकाइयों में विभाज्य है। उदाहरण के लिए 'वाक्य' एकाधिक 'शब्दों' से बनता है तथा 'शब्द' एकाधिक 'ध्वनियों' से। यह बहुघटकता, विच्छिन्नता, विविक्तता या कई इकाइयों से विभाज्यता अन्य जीवों की भाषा में नहीं मिलती। उदाहरणार्थ, बहुत से नर जीव यदि मादा को यह बतलाना चाहते हैं कि वे कामोत्तेजित हैं तो एक विशिष्ट प्रकार का ध्वनि-संकेत करते हैं जो मानव द्वारा प्रयुक्त वाक्यादि जैसा नहीं होता, जो विभिन्न शब्दों से बना हो। वह पूरा-का-पूरा अविच्छिन्न रूप से एक ही इकाई होता है। यदि उसके ध्वनि-संकेत को टुकड़ों में विभक्त भी करें तो वे उस रूप में सार्थक नहीं होते, जैसे मानव-भाषा के वाक्य के शब्द। इस तरह एकाधिक इकाइयों से बना होना या विविक्तता केवल मानव-भाषा का ही अभिलक्षण है।

6. द्वैतता (Duality)—भाषा में किसी भी वाक्य या उच्चार (Utterance) को लें, उसमें दो स्तर होते हैं। एक स्तर की इकाइयाँ सार्थक होती हैं तथा दूसरे स्तर की इकाइयाँ निरर्थक होती हैं। इन दो स्तरों की स्थिति को ही द्वैतता कहते हैं। इन इकाइयों में सार्थक इकाइयों को रूपिम (शब्द, धातु, प्रत्यय, उपसर्ग, कारक चिह्न आदि) कहते हैं। उदाहरण के लिए 'बंदर ने फल तोड़े' वाक्य में बंदर + ने + फल + तोड़ + ए ये पाँच सार्थक इकाइयाँ (अथवा रूपिम) हैं। दूसरे स्तर की इकाइयाँ वे ध्वनियाँ हैं जिनसे ये सार्थक इकाइयाँ बनी हैं। उदाहरणार्थ 'बंदर' में ब् + अ + न् + द् + अ + र् से छह ध्वनियाँ हैं। इन ध्वनियों का अपना कोई अर्थ नहीं होता, किन्तु ये आपस में मिलकर, भाषा में सार्थक इकाइयों का निर्माण करती हैं। इस प्रसंग में यह ध्यान देने की बात है कि ये ध्वनियाँ अपने आप में निरर्थक होती हैं, किन्तु ये अर्थभेदक होती हैं। उदाहरण के लिए 'क' और 'घ' ध्वनियों का अपना कोई अर्थ नहीं है, किन्तु 'कोड़ा' और 'घोड़ा' में अर्थ का भेद या अन्तर 'क' और 'घ' के कारण ही है। इस तरह यहाँ 'क' 'घ' ध्वनियाँ अर्थभेदक हैं। पहले स्तर की इकाइयों को 'रूपिम' कहा गया है

Scanned with CamScanner

उसी तरह दूसरे स्तर की इकाइयों को भाषा विज्ञान में स्वनिम कहते हैं, जिन्हें यहाँ सरलता के लिए 'ध्वनि' कहा गया है।

इस द्वैतता को 'अभिरचना की द्वैतता' (Duality of pattern) भी कहते हैं, अर्थात् भाषा में एक साथ दो स्तरों पर अभिरचनाएँ होती हैं। अर्थद्योतक या विचारद्योतक इकाइयों (अर्थात् रुपिम) के स्तर पर तथा अर्थभेदक इकाइयों (अर्थात् स्वनिम) के स्तर पर। इस तरह भाषा इन दो स्तरों पर पाई जाने वाली अभिरचनाओं के योग का परिणाम होती है। अभिरचना (Pattern) उस विशिष्ट क्रम तथा व्यवस्था वाले स्वरूप या साँचे को कहते हैं जो भाषा में उपर्युक्त दोनों स्तरों पर पाए जाते हैं। यह अभिलक्षण भी प्रायः केवल मानव-भाषा में ही मिलता है। यों अपवादतः मधुमक्खियों की भाषा में भी वह थोड़ा-बहुत होता है।

7. भूमिकाओं की परस्पर परिवर्तनीयता (Interchangeability of roles)–जब हम बातचीत करते हैं तो वक्ता-श्रोता की भूमिकाएँ बदलती रहती हैं। वक्ता बोलता है तो श्रोता सुनता है, फिर जब श्रोता उत्तर देता है तो अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो वक्ता बन जाता है और तब प्रथम वक्ता श्रोता हो जाता है। यही है भूमिकाओं की अदला-बदली या उनका क्रम परिवर्तन या उनकी परस्पर परिवर्तनीयता। यों अनेक मानवेतर प्राणियों (जैसे बंदर, मधुमक्खी आदि) की भाषाओं में भी वह अभिलक्षण मिलता है, पर थोड़ी देर तक, बहुत लंबा नहीं। साथ ही कुछ प्राणियों में, सभी में नहीं।

8. अंतरणता (Displacement)–कुछ अपवादों को छोड़कर मानवेतर जीवों की भाषा केवल वर्तमान के विषय में सूचना दे सकती है, भूत या भविष्य के विषय में नहीं। इसके विपरीत मानव-भाषा वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हुए भी भूत तथा भविष्य के विषय में भी कहने में समर्थ है। इस तरह मानव-भाषा कालांतरण कर सकती हैं। ऐसे ही मानवेतर भाषा प्रायः उसी स्थान या उसके आसपास के बारे में सूचना दे सकती है जहाँ भाषा-व्यापार हो रहा है, दूर के स्थान के विषय में नहीं। किन्तु मानव-भाषा इसमें भी समर्थ है। इस तरह वह स्थानान्तरण भी कर सकती है। इस प्रकार दिक्कालांतरण (स्थान और काल का अन्तरण) मानव-भाषा का एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण है। यों भविष्य के विषय में मधुमक्खियों तथा कुछ अन्य जीव भी कभी-कभी संप्रेषण करते पाए गए हैं।

9. मौखिकता-श्रव्यता–मानव भाषा मुँह से बोली जाती है तथा कान से सुनी जाती है, इस तरह वह मौखिक-श्रव्य सरणि (channel) का प्रयोग करती है। भाषा की लिखित-पठित सरणि मूलतः इसी पर आधारित होती है। यों मानवेतर प्राणियों में भी कुछ इसका प्रयोग करते हैं, किन्तु कुछ अन्य सरणियों का भी/ही प्रयोग करते हैं। जैसे मधुमक्खियाँ नृत्य द्वारा भी कभी-कभी संप्रेषण करती है जो दृश्य-सरणि है तथा ऐसे ही गंध निकालकर भी संप्रेषण करना देखा गया है जो प्राण-सरणि है।

10. असहजवृत्तिकता (Non-instinctivity)–मानवेतर प्राणी भूख, कामेच्छा, भय आदि जीव-सुलभ सहज बातों के कारण प्रायः सहजवृत्तिकत (instinctively) अपने मुँह से कुछ ध्वनियाँ निकालते हैं, किन्तु ध्वनियाँ उस अर्थ में भाषा नहीं होतीं, जिस अर्थ में मानव-भाषा होती है। मानव भाषा मूलतः असहजवृत्तिक (non-instinctive) होती है। जीवन की सहजात वृत्तियों (instincts) से उसका सम्बन्ध नहीं होता।

Scanned with CamScanner